DLA

Editorial
DLA Media (Amar Ujala Group),
UP Edition, July 2, 2012

कैसे मिलेगा ऊर्जा का समाधान

वीके जोशी

ऊर्जा की समस्या को देखते हुए भारत सरकार ने परमाणु ऊर्जा को बढ़ावा देने के प्रयास किए हैं, पर इन प्रयासों को अनेक प्रकार के भ्रामक प्रचारों का सामना कर रहा है, वास्तविकता जानने के लिए+ कुछ दिनों पूर्व नरोरा, बुलन्दशहर में स्थित परमाणु बिजलीघर का एक चक्कर लगाया, सुना था कि परमाणु बिजलीघर के क्लच टावर से निकले पानी को जब नदी या समुद्र में बहाया जाता है तो उस से जल के समस्त जीव विकिरण से नष्ट हो जाते हैं।

क्या सच में ऐसा होता होगा। परमाणु बिजली उत्पादन से संबंधित सभी भ्रमों के निवारण के लिए+ हाल में देश के आठ वैज्ञानिक, डाक्टर एवं पर्यावरणविदों ने बिजलीघर ही नहीं बल्कि नरोरा में बिजलीघर के डेढ़ किलोमीटर के दायरे में नब्बे के दशक के प्रारम्भ में लगाए+ गए सात लाख वृक्षों के जंगल का एक चक्कर भी लगाया।+ इस जंगल में वन्य प्राणियों की अद्भुत अठखेलियां देखने को मिलीं, घुसते ही चिड़ियों के कलरव से सुबह का आलस्य भाग गया, वन की सरहद पर बनी दीवार पर बंदरों की एक बड़ी फौज कतार बनाए, मानो स्वागत को बैठी थी। मुश्किल से बीस कदम गए+ होंगे कि नील गाय, हिरन और जंगली सुअर के झुंड हमारी अनदेखी करते हुए+ चरने में मग्न थे, उन तीन घंटों में अनगिनत प्रकार के पशु-पक्षी देखे जिनमें मोर, रेड क्रेस्टेड मोचार्ड, तीतर, जंगली मुर्गे, बगुले, नहर में मछलियां, घड़ियाल, मगर और बड़े-बड़े कछुए प्रमुख थे, साथ चल रहे एनपीसीआईएल के अधिकारी ने बताया कि यहां जाड़ों में बाघ भी रहते हैं।

भू वैज्ञानिक होने के नाते अनेक वनों में घूमने का सरकारी कार्यकाल के दौरान सौभाग्य हुआ, पर इतने सारे और इतने प्रकार के पशु-पक्षी एक साथ कभी नहीं देखे, रहा प्रश्न परमाणु बिजलीघर के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव का तो उसका उत्तर तो एक साथ स्वस्थ व अनुकूल पर्यावरण में रह रहे इन जीवों की घनी आबादी से ही मिल जाता है, जब किसी प्रकार का विकिरण प्लाट के बाहर जाएगा ही नहीं तो उसके खतरे अपने आप ही नहीं रहेंगे।

बिजलीघर परिसर अनेक भवन में है, जिसमें सैकड़ों कर्मचारी कार्य करते हैं, परिसर से निकला अप्रयोज्य पानी जहां गंगा नहर में मिलता है वहां असंख्य कीट थे जिनको खाने के लिए बड़ी-बड़ी मछलियों में होड़ मची हुई+ थी, यह पानी भी शुद्धिकरण+ के बाद ही बाहर जाता है तथा इसका परमाणु सबब से कुछ लेना-देना नहीं होता। प्लांट के भीतर हर घड़ी, हर कदम पर की जाने वाली विकिरण की जांच को देख कर अनुमान लगा कि यहां पर किसी भी प्रकार से विकिरण निकलने का कोई मौका नहीं है, अक्सर परमाणु बिजलीघर में लगी दैत्यकार क्लच टावरों को देख लोग भ्रम में पड़ जाते हैं कि कहीं इस धुएं से तो विकिरण नहीं होता होगा।+ वहां जाने पर ज्ञात हुआ कि क्लच टावर से निकलने वाला धुंआ तो मात्र भाप होती है। प्लांट से निकलने वाली सारी गैस एक 140 मीटर ऊंची चिमनी से निकाली जाती है, चिमनी में लगे फिल्टर सारे धातु कणों को छान लेते हैं और यदि विकिरण का लेशमात्र भी अंदेशा होता है तो प्लांट स्वतः बंद हो जाता है। कंट्रोल रूम से प्लांट की हर गतिविधि पर 24 घंटे नजर रखी जाती है, कंट्रोल रूम में ड्यूटी करने वाले अभियंताओं को कड़े परीक्षण से गुजरना पड़ता है जो लोग इस परीक्षा के दस पर्चों में उत्तीर्ण हो पाते हैं वही ड्यूटी कर सकते हैं, हर कदम पर तकनीकी और सुरक्षा को लेकर सख्ती इतनी होती है कि पावर प्लांट से केवल बिजली बाहर जाती है और कुछ नहीं। अमेरिका के न्यूयार्क में थॉमस एडिसन ने 1882 में जब अपने जेनरेटर से घरों को बिजली देना प्रारम्भ किया तो भयाक्रांत अनेक परिवारों ने उस बिजली को लेने से इंकार कर दिया, पर सरकार के सतत् प्रयास से आज वह देश परमाणु ऊर्जा में सबसे अग्रणी है, यदि विकसित देशों की श्रेणी में आना है तो हमें इस निर्मूल भय को मिटाना होगा।

2, इम्प्रूवेंट ट्रस्ट फ्लैट हैवलोक रोड, लखनऊ